L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)

B.A PART - II
PAPER - II
psychology - (Honours)

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Assitant - professor.
Guest - Teacher.
V. S. J. college, RAJNAGAR
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumar dbg 2018 @ gmail. com.

TOPIC - discuss the social determinants of personality.

व्यक्तित्व के विकास पर सामाजिक स्थितियों का काफी प्रभाव पड़ता है। मनोविद वाटसन ने कहा है कि यदि उसे एक शिशु सौंप दिया जाय तो वह उसे अनुकूल वातावरण में रखकर अपनी इच्छानुसार वकील, डॉक्टर, व्यापारी, इंजीनियर, चोर, बदमाश, नेता या भी यदि बना सकता है। व्यक्ति में बच्चा जन्म के समय न सामाजिक होता है, न असामाजिक। वह सिर्फ मांस का एक पुतला होता है। बच्चों के व्यक्तित्व के विकास पर सामाजिक कारकों का प्रभाव जन्म के बाद प्रारंभ होता है। यहाँ पर कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक कारकों का वर्णन किया गया है, जो निम्नलिखित हैं।

(i) घर का प्रभाव :- घर में माता-पिता, भाई-बहन, चाचा, चाची, दादा-दादी आदि का प्रभाव बच्चों के व्यक्तित्व पर पड़ता है। अधिक प्यार या दुलार और अधिक डाँट-फटकार या घृणा दोनों बच्चों के व्यक्तित्व को अच्छा नहीं बनाते। अतः उन्हें माता-पिता के द्वारा उचित, संतुलित और नियंत्रित स्नेह और डाँट दोनों मिलना आवश्यक है।

(ii) माता-पिता के आपस का संबंध :- जो माता-पिता आपस में कलह करते रहते उनके बच्चों के व्यक्तित्व का विकास असंतुलित हो जाता है। बच्चों में भी कलह करने की प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है। यदि माता-पिता आपस में मिलकर रहते हैं।

Scanned with CamScanner

बच्चों पर भी गहरा असर पड़ता है।

(iii) माता-पिता का बच्चों के साथ संबंध - धनी घरों में माता-पिता बच्चों की आवश्यकता को समझकर उनके व्यक्तित्व के विकास में सहयोग देते हैं। और गरीब घरों में माता-पिता बच्चों की आवश्यकता को नहीं समझते, अतः उनके व्यक्तित्व का उचित विकास नहीं हो पाता। गरीब माता-पिता अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दिनभर काम-काज के लिए बाहर रहते हैं, जिससे उनका संबंध बच्चों के साथ कम रह जाता है। इससे बच्चे माता-पिता के लाड़, स्नेह और प्रेमभाव से वंचित रह जाते हैं। अतः उनके व्यक्तित्व का उचित विकास नहीं हो पाता।

(iv) घर के बच्चों का दूसरे बच्चों के साथ संबंध - यदि घर में अधिक बच्चे रहते हैं तो उन्हें अधिक बच्चों के साथ खेलने का मौका मिलता है। वे सामाजिक होते हैं। पर घर में केवल एक ही बच्चा रहने से उसका सामाजिक समायोजन ठीक नहीं रह पाता। यदि बच्चे एक-दूसरे से मिल जुलकर रहते हैं, तो उनका व्यक्तित्व समुचित रूप से विकसित हो पाता है।

(v) इकलौता बच्चा - जिस घर में इकलौता बच्चा होता है, उस बच्चे के आचार और व्यवहार में दूसरे लोग दिलचस्पी नहीं रखते हैं। ऐसे बच्चे एकाधिपत्य और परावलंबी स्वभाव के हो जाते हैं। ऐसे बच्चे जिद्दी हो जाते हैं। उनके व्यक्तित्व का विकास समुचित रूप से नहीं हो पाता।

(vi) जन्म-क्रम - जिस बच्चे का जन्म परिवार में पहले होता है, वह बच्चा अधिक प्रिय हो जाता है। जो बच्चा परिवार में मंझला होता है। उसमें प्रतियोगिता या स्पर्धा की भावना पाया

जाती है। और व्यक्ति समूह परिवार के एकाकी छोटे बच्चे में अधिक प्रेरित व्यक्तित्व का विकास होता है, वह अपने को समझदार समझता है। और दूसरों की परवाह नहीं करता है। क्योंकि वह परिवार वालों का प्रिय होता है।

(vii) पड़ोस :- समाज की पाठशाला है। स्थिर और अस्थिर स्थिर रहने वाला पड़ोस वह है, जो हमेशा एक जगह पर रहता है। अस्थिर पड़ोस उसे कहते हैं जो हमेशा एक जगह से कुछ जगह बदलता रहता है। अस्थिर परिवार में रहने वाले बच्चों में हिल-मिलकर रहने की प्रवृत्ति नहीं पाई जाती है। पड़ोस के लोग यदि सहयोगी और मिलनसार होते हैं तो बच्चों पर इसका अच्छा असर पड़ता है। और उनका व्यक्तित्व उचित रूप से विकसित होता है।

(viii) स्कूल (School) :- यहाँ बच्चों के व्यक्तित्व पर पर समूह का प्रभाव पड़ता है। शिक्षक, अपने सहपाठियों का अपने से उच्च कक्षाओं के छात्रों की तथा अपने से नीचे कक्षाओं के शिक्षक और मित्र के व्यवहार में अन्तर रहने से बच्चों का व्यक्तित्व असंतुलित हो जाता है और उन्हें की अनुभवों कभी सहपाठी का करते हैं।

(ix) खेल (Play) :- खेल के मैदान में अनेक बच्चों के साथ खेलने में और खेल के नियम सीखना होता है। इसका ज्ञान उन्हें होता है। साथ ही सामाजिक, शारीरिक मानसिक और संवेगात्मक योग्यताओं का भी उनमें विकास होता है। इस प्रकार उनमें अनुशासन का विकास होता है।

(x) संगी-साथी (Companion) :- चोर, डाकू, शराबी और ठगकर्मी की अपनी अलग संगति होती है जो जिस संगति में रहेगा, उसमें उसी तरह के विचार

उत्पन्न होती और वह उसी तरह की आदत होती जाती है, क्योंकि संस्था के बदलने होने पर उनकी आदतें रुचियों का विकास होता है।

(vi) सांस्कृतिक वातावरण :- व्यक्ति पर समाज का आदतों के निर्माण पर पड़ता है। प्रत्येक समाज एवं संस्कृति के आदत का रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज और तरीके, आचार-विचार आदि। प्रत्येक संस्कृति की आदत से भिन्न होती है। एक अंग्रेज की आदतें एक हिन्दुस्तानी से भिन्न होती हैं। किसी संस्कृति के आदतें भांति-भांति प्रकृति के होते हैं। जो व्यक्ति के व्यक्तित्व का अंग है, (Personality Development)
आदतों के विकास में संस्कृति का बड़ा योगदान होता है। संस्कृति एक व्यापक शब्द है। जिसमें सभी समाज के रीति-रिवाज, आदतें, परम्पराएँ, रहन-सहन और तरीके से होता है। प्रत्येक समाज की एक विशेष संस्कृति होती है और यहाँ प्रत्येक व्यक्ति जिस समाज में जन्म लेता है अतः उस समाज की संस्कृति का प्रभाव उसके व्यवहार एवं आदतों पर काफी पड़ता है। एक भारतीय व्यक्ति बहुत दिनों के बाद किसी परिचित से मिलने पर दोनों हाथ जोड़कर नमस्कार कर अपनी प्रसन्नता जाहिर करता है। परन्तु एक अमेरिकन व्यक्ति ऐसे अवसर पर हाथ मिलाकर या चूमकर के अपनी प्रसन्नता जाहिर करता है। ऐसा स्वाभाविक होता है। क्योंकि अमेरिकन संस्कृति भारतीय संस्कृति से भिन्न होती है।

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Date- 18/05/2020

Scanned with CamScanner